16

खेतीहर महिलाओं को प्रौद्योगिकीय रूप से सशक्त बनाने के लिए लिंग संबंधी मुद्दे

खेतिहर महिला अनुसंधान निदेशालय द्वारा इन-हाऊस, नैटवर्क तथा अंत: संस्थागत परियोजनाओं के साथ-साथ गृह विज्ञान समन्वित अनुसंधान परियोजना तथा कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में वी-पेज पर एनएआईपी के माध्यम से लिंग संबंधी सूचना एकत्र की गई।

लिंग संबंधी जानकारी केन्द्र: लिंग संबंधी अवधारणा, दृष्टिकोण की सैद्धांतिक तथा अवधारणा भूमिका तथा लिंग संबंधी विश्लेषणों के लिए विश्लेषणात्मक फ्रेमवर्क पर सूचना प्रदान करने के लिए लिंग संबंधी जानकारी केन्द्र पोर्टल (knowledgecentre.drwh.org) विकसित किया गया।

खेतिहर महिलाओं पर डेटाबेस: अ.भा.स.अ.म. गृहविज्ञान की डेटाबुक के आधार पर खेतिहर महिलाओं पर डेटाबेस तैयार किया गया। महिला और पुरुषों का राज्यवार, जोत क्षेत्रवार तथा कार्यकलाप वार प्रतिभागी रूपरेखा तथा निर्णय लेने की रूपरेखा से संबंधित डेटा एकत्र किया गया। कृषि और पशुधन प्रबंधन की विभिन्न कार्यकलापों तथा विभिन्न प्रकार के निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की सहभागिता के प्रसार पर अधिक सार्थक तालिका बनाने के लिए आंकड़ों का मिलान किया गया।

संदर्भ प्रणाली: विश्व के विभिन्न हिस्सों में किए गए अध्ययनों के रिपोजिट्री को तैयार करने तथा इन अध्ययनों तक स्टेकहोल्डरों की पहुंच प्रदान करने के लिए संदर्भों को एकत्र किया गया तथा 1,038 को डेटाबेस में डाला गया। इन स्रोतों में वार्षिक रिपोर्ट, जर्नल, कार्यवृत्त, शोध प्रबंध तथा पुस्तकें शामिल हैं। सरल पहुंच में मदद देने के लिए एक उपभोक्ता अनुकूल परस्पर मेल-मिलाप विकसित किया गया जो विषय चार तथा वर्षवार है।

पशुधन उत्पादन में लघु उद्योग उद्यमशीलता: उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, असम तथा नगलैंड में पशुधन उत्पादन के क्षेत्र में कृषक महिलाओं के संसाधन आधार, पारंपरिक ज्ञान तथा सहभागिता पर किए गए अध्ययन से पता लगा है कि महिलाएं 3 घंटा/दिवस से ज्यादा समय पशुधन प्रबंधन से संबंधित कार्यकलापों पर खर्च करती हैं जैसे खिलाई, पिलाई, पानी देना, पशुशाला की सफाई तथा गोबर साफ करना शामिल है। क्षेत्र में सामाजिक-आर्थक तथा प्राकृतिक संसाधनों के आधार में पशुओं की नस्लों को पालते हैं। लघु-जुगाली वाले पशु पालन में शामिल समस्याओं में आहार और दवाई की लागत, वैज्ञानिक आहार की अपर्याप्त जानकारी, आवास तथा स्वास्थ्य देखभाल उपाय शामिल हैं। एकाकी परिवारों से संबंधित महिलाएं गोपशु तथा भैंस पालन में ज्यादा शामिल हैं तथा ये उन्नत प्रौद्योगिकियों के अंगीकरण कार्य में बेहतर हैं। अल्प-संसाधन वाली महिलाओं के लिए नए एजोला उत्पादन ने नए विकल्प को प्रचूर प्रोटीनयुक्त आहार के स्रोत के रूप में प्रदान किया है इससे बत्तख के राशन में 40-50 प्रतिशत तक आहार लागत को कम करने के लिए 100 प्रतिशत मूंगफली खली से प्रस्थापित किया जा सकता है और इसमें स्वाद तथा वृद्धि निष्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। 4-5 सप्ताह पुराने चूजे की उन्नत नस्लों को, प्रांगण पालन के तहत पालने के लिए टीकाकरण के बाद महिला स्वयं सेवा दलों को प्रदान किए गए। समग्र हाउस होल्ड आय में से प्रांगण कुक्कुट पालन आय का योगदान 5-6 माह में 6-8 पक्षी से रु. 1,000-3,170/महिला के बीच अलग-अलग का। लिंग परिदृश्य में आकलन के लिए डीआरडब्ल्यूए फार्म में उन्नत चारा फसल किस्मों का रख-रखाव किया गया।

सी.आई.बी.ए., चेन्नई के साथ सहयोग से जल जीवपालन में जैंडर-मेनस्ट्रीम कार्य को ध्यान में रखते हुए केकड़ों के मोटेपन का उड़ीसा की चिलिका झील में दो स्थानों पर पहली बार डब्ल्यूएसएचजी सदस्यों के बीच आरंभ किया गया। स्थानीय रूप से उपलब्ध बांस का इस्तेमाल पेन के निर्माण के लिए किया

महिला विशिष्ट आईटीके का दस्तावेजीकरण

खेतिहर महिलाओं द्वारा अपनाई जा रही अनाज तथा दलहन को घर में भंडारित करने की लोकप्रिय तकनीकों को दस्तावेजीकृत किया गया इससे अनाज में घुन लगने से खाद्यान्न हानि में 70 प्रतिशत की बचत करने में मदद मिली। लहसुन के साथ चावल भंडारण से चावल को एक वर्ष तक कीट-नाशीजीव से बचाने में मदद मिली जबकि प्रति 75 कि.ग्रा. चावल के लिए 500 ग्रा. हल्दी के उपयोग से चावल को तीन वर्ष तक कीट नाशीजीव से बचाया गया। अदरक, मिर्च तथा सौंफ के भंडारण कार्यों की पहचान की गई। धान की भूसी से बना पुडुगा उड़ीसा के गंजम जिले के भांजी नगर क्षेत्र में अनाज तथा दलहन भंडारण के लिए काफी सामान्य है।

गया। 5 माह की मोटेपन की अवधि के दौरान लगभग रु. 2,000/- का लाभ अर्जित किया गया।

लिंग संबंधी संवेदनशील विस्तार मॉडल: ग्राम स्तर की अर्ध विस्तार कार्मिक (वीपीईडब्ल्यू) अवधारणा की जांच विभिन्न क्षमता निर्माण विधियों के लिए की गई जैसे पूर्व-मौसमी प्रशिक्षण, समीक्षा बैठकें, प्रदर्शन दौरे, प्रदर्शन विधि, परिणाम प्रदर्शन, नैदानिक दौरे, खेत दिवस तथा कृषि संबंधी साहित्य। वीपीईडब्ल्यु में विशेषताओं जैसे संदेश प्रेषण, प्रौद्योगिकी निष्पादन तथा संगठनात्मक दक्षता के कारण परिवर्तन देखे गए। ये माडल वैज्ञानिक कृषि विधि के बारे में आम जागरूकता लाने तथा कृषि सूचना और प्रौद्योगिकी के लिए मांग बनाने में काफी प्रभावशाली हैं।

कृषि श्रमिकों में अल्प संसाधन वाली महिलाओं के लिए उपयुक्त ग्रुप अवधारणा तथा कम लागत वाली विधियों का अनुसरण कृषि आधारित उद्यमों के विकास में किया गया इनमें खुंबी की खेती, चावल प्रसंस्करण, बड्डी बनाना, मधुमक्खी पालन तथा प्रांगण कुक्कुट पालन शामिल हैं। कम समय में अधिक औसत उत्पादन तथा लाभ अर्जित करने के संदर्भ में खुम्बी की खेती को अत्यधिक उचित उद्यम पाया गया।

खुम्बी-महिला सशक्तिकरण के लिए एक हस्तक्षेप

उड़ीसा में कटक जिले के सेलीपुर ब्लाक में 'जय श्रीराम' नामक स्वयं सेवा दल, महिला सशक्तीकरण के लिए एक प्रशस्त मार्ग के रूप में उभरकर सामने आया है। भूसी और आयस्टर खुम्बी की खेती में खेतिहर महिला के सशक्तिकरण की प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है। सामुदायिक सौहार्द को प्रोत्साहन, केन्द्रित सामूहिक विचार-विमर्श, सफलतम यूनिटों का प्रदर्शन, नियमित परामर्श सेवाएं तथा सफलतम किसानों के अनुभवों के आदान-प्रदान द्वारा कायम रखने में वैज्ञानिकों ने अथक प्रयास किए हैं। प्रशिक्षण व प्रदर्शन आयोजित किए गए इनके बाद महत्वपूर्ण इनपुट जैसे स्थान तथा पोलीथलीन की सहायता प्रदान की गई। दक्षता हासिल करने के लिए महिलाओं की सहायता के लिए नियमित निगरानी की व्यवस्था की गई। प्रथम चरण को आयस्टर मशरूम के 30 बैड के उद्यम से आरंभ किया गया। इसमें निवेश की राशि रु. 450 तथा कुल पैदावार 50 कि.ग्रा. थी इसमें से आवास में 30 कि.ग्रा. की खपत की गई तथा रु. 350 के लाभ के साथ रु. 800 की कुल आय प्राप्त की।

इस उद्यम की प्रत्येक हाउसहोल्ड में 10-30 बैड के साथ एकल उद्यम में ब्रांचें उपलब्ध हैं। इससे सरलता से विपणन सक्षम हुआ है। खेतिहर महिलाओं के परिवार के पुरुष सहयोगियों ने इस प्रकार के प्रयासों की सराहना की क्योंकि इन कार्यों से घरेलु कार्यों में कोई व्यवधान नहीं हुआ है। महिलाओं ने अपना बहुत कम समय लगभग 2 घंटा/प्रतिदिन इसमें लगाया और अच्छी आय अर्जित की। खेतिहर महिलाओं ने यह महसूस किया कि आयस्टर खुम्बी की खेती स्ट्रा-खुम्बी की तुलना में ज्यादा लाभकारी होने के साथ-साथ कम निवेश वाली है। नेतृत्व विकास के संबंध में एसएचजी अध्यक्ष श्रीमती सावित्री राउत ने सदस्यों के दल को प्रशिक्षित करने की पहल की तथा इनमें से तीन खुम्बी की खेती में प्रशिक्षक का काम कर रहे हैं। प्रशिक्षण व प्रदर्शन कार्यों को समीपवर्ती गांवों में किया गया और व्यापक स्तर पर उद्यम आरंभ करने के लिए अब और अधिक महिलाएं आगे आई हैं। ग्राम्य बैंक, तांगी ने रु. 2.5 लाख का ऋण स्वीकृत किया।

खेती एवं संबद्ध कार्यों में आदिवासी महिलाएं: फसल और पशुधन उत्पादन में आदिवासी महिलाएं बहुत कम संख्या में कार्यरत हैं और ये अपने भोजन, ईंधन तथा चारे की जरूरतों को पूरा करने के लिए गैर-लकड़ी वाले वन उत्पादों को एकत्र करने तथा दैनिक श्रमिक के रूप में काम करने पर निर्भर हैं। कृषि आधारित व्यवसाय 55% आदिवासी हाउसहोल्ड के लिए आय का मुख्य स्रोत है जबकि 35 प्रतिशत आदिवासी हाउसहोल्ड के लिए यह गौण व्यवसाय है।

विभिन्न गांवों से 138 मातृत्व/खेतिहर महिलाओं पर प्रचूर प्रोटीन तथा विटामिन वाली शकरकंदी पर आधारित दूध छुड़ाने वाले कम लागत वाले मिश्रित संयोजन का प्रतिभागी रूप में मूल्यांकन किया गया। इस प्रौद्योगिकी को सत्तानवे प्रतिभागियों ने स्वीकार किया।

अखिल भारतीय गृह विज्ञान समन्वित अनुसंधान परियोजना

लिंग संबंधी डेटाबेस: हरियाणा, पंजाब, कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, असम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश तथा महाराष्ट्र राज्यों के 1,760 हाउसहोल्ड से लिंग असंतुलित औसत आंकड़ों से पता लगा है कि महिलाएं आवासीय भूमि तथा गैर आवासीय भूमि दोनों पर बेहतर रूप से नियंत्रण रख सकती हैं।

कड़ी मेहनत में कमी: विभिन्न कृषि कार्यों में शामिल कड़ी मेहनत का आकलन किया गया और उचित औजार व उपकरण तैयार किए गए जिनमें मैकेनिकल विन्नोवर, मैट नर्सरी, छितराने/प्रसारित करने वाले औजार, उन्नत दरांती, हार्वेस्ट बैग, रिंग तथा पिलर कटाई यंत्र, हाथ से खरपतवार निकालने वाला उन्नत यंत्र, हैंड रैक, पंक्ति बुआई यंत्र, निबौली पीसने वाला यंत्र, ढेला तोड़ने वाला यंत्र, चारा एकत्र करने वाला यंत्र, धान गहाई यंत्र, गोपल खोर, ठूंठ एकत्र करने वाला यंत्र, त्रिशुल खरपतवार निकालने वाला यंत्र, बिनौला तोड़ने वाला यंत्र, ज्वार कटाई यंत्र, मूंगफली छीलने वाला यंत्र, मक्का शेलर, नवीन डिबलर, बांस का हाथ से चलने वाला कुदाली सैट, उर्वरक छिड़कने वाला यंत्र, पहिए वाला फावड़ा, आलू खोदने वाला यंत्र, सरल खुरपा, मूंगफली छिलका निकालने वाला यंत्र, कौट बैग, खुरपा, उर्वरक ट्रौली, उन्नत आवरण और कैप्रोन शामिल हैं।

सिर पर भार उठाने के एर्गोनोमिक आंकलन से पता लगा है कि यह गरदन और पीठ पर दबाव से राहत में उपयोग है क्योंकि इसमें भार को हाथ से बंधे और पीठ की मांसपेशियों में बदला जाता है।

खाद्य और पोषण सुरक्षा को सुनिश्चित करना: किसान परिवारों के खाद्य उपयोग पैटर्न तथा लिए जाने वाले पोषण की पहचान के लिए किए गए मूल अध्ययन से पता लगा है कि बहुत बड़ी संख्या में बच्चे और किशोर लड़कियां कुपोषण की विभिन्न श्रेणियों में हैं। खेतिहर महिलाओं में आयरन की कमी, एनीमिया प्रभावित था और इस पर ध्यान देने के लिए प्रचूर आयरन वाले उत्पादन 'लेहयाम' को तैयार किया गया जिसमें अल्पदोहित हरी पत्तेदार सब्जियां जैसे चौलाई, कोलोकेसिया, कौधरा, नोल-खोल, बथुआ, धनिया, चोब, सौंफ, पुदीना, पालक, मूली तथा कड़ी पत्ता शामिल हैं।

ये उत्पाद परीक्षण तथा परिष्करण चरण में चल रहे हैं। विभिन्न राज्यों में स्थित अ.भा.स.अ.प. केन्द्रों की सीमा में आने

वाले 45 अंगीकृत गांवों में महिलाओं को पोषण सुरक्षा प्रदान की गई। खाद्य प्रसंस्करण तथा संरक्षण और स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य से मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हुए उद्यमशीलता विकास को प्रोत्साहित किया गया। प्रत्येक केन्द्र द्वारा अंगीकृत गांवों से 30 हाउसहोल्ड में पोषण गार्डन स्थापित किए गए।

किशोर लड़कियों को क्रैच प्रबंधन में प्रशिक्षण, बचपन से ही शिक्षा, शैक्षणिक तथा खेल सामग्री तैयार करने, सब्जी और फल वाले पौधों की नर्सरी तैयार करने, वर्मीकम्पोस्ट बनाने, रंग बनाने वाले औषधीय पौधों की पहचान तथा खुम्बी की खेती में प्रशिक्षण देने के माध्यम से बढ़ावा दिया गया।

अल्पदोहित कृषि और पशु आधारित संसाधनों का उपयोग

विभिन्न कृषि मौसम क्षेत्रों में अल्प-दोहित कृषि और पशु आधारित रेशा संसाधनों के उपयोग की उपलब्धता तथा लोकप्रिय विधि का आकलन किया गया। इस अध्ययन में जूट, पटिडोई, मेस्टा, केला, क्वायर, पामेरा, बब्बर घास, धान की भूसी, हेम्प (बेस्ट), बेंत, ताड़ के पत्ते, कपास (पौड), मूंग, सन्न, अम्बाडी, अलसी, डेंचा, दादुन, ऐरी सिल्क, मूगा सिल्क, मल्बेरी सिल्क, दक्कनी ऊन तथा बकरी व भेड़ के बालों से प्राप्त रेशे शामिल हैं। समस्त फाईबर का इस्तेमाल टैक्सटाईल प्रयोजन हेतु किया गया जबकि क्वायर और पामेरा का इस्तेमाल मुख्य रूप से रस्सी, फ्लोर मैट, बास्केट, धागा, दरी, खेस तथा चादर के लिए किया गया।

प्राकृतिक डाई रंग संकेद्रण में प्राकृतिक डाई को विकसित तथा मानकीकृत किया गया। सिल्क पर प्राकृतिक डाई छपाई प्रक्रिया को मानकीकृत किया गया। डाई और रंगबंधक संकेद्रण को अनुकूल बनाने के लिए प्रारंभिक परीक्षण किए गए। शेड कार्ड तैयार किए गए तथा तीव्रता से परीक्षण का कार्य प्रगति पर है। प्राकृतिक डाई संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए सिल्क नमूनों के लिए छपा हुआ शेड कैटलॉग तैयार किया गया जिसका उद्देश्य इसे दस्तकारों के बीच व्यवसायिक करना था।

अवक्रमित और गैर-अवक्रमित कृषि अपशिष्ट जैसे सीसल (*एगेव मेरीकाना*) जिसे खेत के चारों ओर बाढ़ के रूप में उगाया जाता है और प्राय: इसे कृषि अपशिष्ट के रूप में फेंक दिया जाता है, इसकी पहचान हाथ से बने कागज में बेहतर कच्चे माल के रूप में की गई है। युवक और युवतियों को सीसल के रेशे से डाक से कागज बनाने, लिफाफे, सामान लाने-लेजाने वाले थैले तथा सामान के लिए बड़े थैले बनाने पर प्रशिक्षण दिया गया। रेशे की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने तथा हाथ से कागज बनाने के प्रयोजन हेतु उपयुक्तता के लिए मशीन द्वारा पौधे से रेशे को निकाला गया। गैर निम्नीकृत कृषि अपशिष्ट जैसे पोलीथलीन का इस्तेमाल मूल्यवर्धित उत्पादों को बनाने के लिए किया गया जैसे हैंड-बैग, बरसाती, बच्चों के कपड़े, जयपर, बिब, बच्चों की शीट, बेबी-हुड, रेफ्रीजरेटर के कवर, टेबल मैट, एप्रोन, दस्ताने तथा मैट्रस। विभिन्न कृषि प्रणालियों में महिलाओं द्वारा नाशीजीव के प्रयोग की विधि का अध्ययन किया गया और प्रत्येक फसल के लिए सुरक्षात्मक कपड़े तैयार किए गए।

कृषि श्रमिकों के किशोरावस्था वाले बच्चों की वैकल्पिक देखभाल, विद्यालय पूर्व के लिए गुणवत्ता शिक्षण परिवेश तथा विकासात्मक विलंब को रोकने के लिए हस्तक्षेप के लिए प्रशिक्षण माडल तैयार किए गए।

❑

कृषि में दूर-दृष्टि नीति विश्लेषण तथा लिंग संबंधी मुद्दे

कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रोफेशनलों के लिए कृषि अनुसंधान और विस्तार में लिंग परिदृश्य को सुदृढ़ीकरण हेतु प्रशिक्षण व कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें लिंग अवधारणा, कृषि में लिंग मुद्दे, लिंग विश्लेषण, कार्य प्रतिभागिता दर तथा कृषि में लिंग के महत्व संबंधी विषयों को शामिल किया गया। उड़ीसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों पर स्नातक स्तर तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में छात्रों के दाखिले पर पंद्रह वर्ष के लिंगवार डेटा में वर्ष 2009-10 में कृषि विषय में छात्राओं के दाखिले में बड़ा हुआ रुझान देखने में आया है जो वर्ष 1993-94 में 37 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2009-10 में 58 प्रतिशत हो गया। और इसी प्रकार पशु चिकित्सा विज्ञान तथा पशु पालन पाठ्यक्रम में स्नातक स्तर पर वर्ष 1994-95 में 7.6 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2009-10 में 37.3 प्रतिशत हो गया।